पूर्वोत्तर भारत के परव त्यौहार

पूर्वोत्तर भारत के प्रमुख पर्व

लोसर

- तिब्बत और हिमालय क्षेत्र में रहने वाले बौद्ध लोसर पर्व को नववर्ष के शुभारंभ के रूप में मनाते हैं।
- यह 'लोसर पर्व' लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश में उमंग के साथ मनाया जाता है।

हॉर्नबिल महोत्सव

- हॉर्नबिल महोत्सव का आयोजन नगालैंड के स्थापना दिवस, 1 दिसंबर को किया जाता है।
- पूरे एक सप्ताह तक नगालैंड की जनजातीय संस्कृति की रंगारंग प्रस्तुतियाँ पेश की जाती हैं।
- इस दौरान स्थानीय लोकनृत्य, संगीत, वास्तुशिल्प आदि के रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

लोसूंग/लोसांग

- यह पर्व सिक्किम में निवास करने वाली भूटिया और लेप्चा जनजातियों द्वारा दिसंबर माह में 'सिक्किमी नववर्ष' के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।
- इसे 'नामसूंग' भी कहा जाता है।
- यह पर्व अच्छी कृषि उपज के लिये प्रकृति का आभार व्यक्त करने के लिये भी मनाया जाता है।

सागा दावा

- भगवान बुद्ध की जयंती को सिक्किम में 'सागा दावा' नाम से मनाया जाता है।
- यह पर्व महात्मा बुद्ध की जयंती के साथ-साथ उनके निर्वाण (ज्ञान प्राप्ति) और महापरिनिर्वाण के उपलक्ष्य में भी मनाया जाता है।

बिहू

- असम का सर्वाधिक लोकप्रिय त्योहार बिहू साल में तीन बार मनाया जाता है-
  - ✔ बोहाग या रोंगाली बिहू - बैशाख - मध्य अप्रैल में
  - ✔ कांगोली बिहू या काटी बिहू - कार्तिक - मध्य अक्तूबर में
  - ✔ माघ बिहू या भोगाली बिहू - माघ - मध्य जनवरी में
- बिहू उत्सव, असम के कृषक समुदाय व मौसम में होने वाले परिवर्तनों से निर्धारित फसल चक्र से गहराई से जुड़ा हुआ है।
- कृषि और मौसम में होने वाले परिवर्तनों से जुड़ा होने के कारण यह पर्व असम में रहने वाले सभी धर्मों और विश्वासों को मानने वाले लोगों द्वारा मनाया जाता है।

अंबुबाची मेला

- गुवाहाटी (असम) के कामाख्या मंदिर के पास मानसून के मौसम में यह पर्व मनाया जाता है।
- इस दौरान यहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु विवाह और संतान की कामना से आते हैं। इसे 'पूर्व का महाकुंभ' भी कहा जाता है।

खर्ची पूजा

- यह हर साल जुलाई-अगस्त में त्रिपुरा में आयोजित की जाती है।
- यह त्रिपुरा के आदिवासियों द्वारा की जाने वाली चौदह देवताओं की सामूहिक पूजा है।
- इस समय समस्त त्रिपुरा के आदिवासी लोग अपने कुल देवता की पूजा करने और पुरानी संस्कृति को संजोए रखने के लिये हज़ारों की संख्या में एकत्रित होते हैं।

साजीबू चेइराओबा

- 'साजीबू चेइराओबा' मणिपुर की 'मेईती' जनजाति द्वारा नववर्ष के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला पर्व है,
- इसे 'सौ ड्रमों का पर्व' भी कहते हैं।
- इस समय लोग 'दकमंडा', 'दकसारी' नामक सुंदर रंग-बिरंगे परिधान पहनते हैं और ड्रमों की ताल के साथ नृत्य करते हुए स्थानीय गीत गाते हैं।

कांग चिंग्बा

- 'कांग चिंग्बा' मणिपुर के मेईती हिंदुओं द्वारा जुलाई में आयोजित की जाने वाली 'रथयात्रा' है।
- यह रथयात्रा पुरी में होने वाली रथयात्रा के समान है।
- इस दौरान स्त्री-पुरुष 'संकीर्तन' करते हैं। भगवान जगन्नाथ को जिस वाहन से ले जाया जाता है, उसे कांग कहते हैं।

सेक्रेन्यी पर्व

- नगालैंड की 'अंगामी' जनजाति द्वारा मनाया जाने वाला सेक्रेन्यी पर्व युद्ध में जाने से पूर्व शुद्धीकरण के विधि-विधानों से जुड़ा है। इसे 'फौसान्यी' भी कहा जाता है।
- इस पर्व के दौरान युवक गाँव के पानी के स्रोत के पास विधि-विधान से स्नान करते हैं और अपने अस्त्र-शस्त्रों को भी पवित्र करते हैं।
- स्त्रियों को इसमें हिस्सा लेने की अनुमति नहीं होती है।

लुई-नगाई-नी

- 'लुई-नगाई-नी' मणिपुर में निवास करने वाली नगा जनजातियों द्वारा मनाया जाने वाला कृषि से संबंधित त्योहार है।
- बसंत के आगमन के साथ इस समय नगा कृषक अपने खेतों में नए बीज बोते हैं।
- इस पर्व के समय नगा संस्कृति का जीवंत दर्शन उनके लोकगीतों, नृत्यों, वेश-भूषा और खान-पान आदि में किये जा सकता है।

ड्री

- 'ड्री' अरुणाचल प्रदेश की ज़ीरो वैली में रहने वाली 'अपातनी' जनजाति द्वारा प्रत्येक वर्ष 5 से 7 जुलाई तक मनाया जाने वाला कृषि से जुड़ा हुआ त्योहार है।
- 'ड्री' का शाब्दिक अर्थ है 'अनाज की कमी के समय उसकी खरीद या उधार मांगना'।
- इस त्योहार में महिलाएँ वाइन बनाती हैं तथा पुरुष इसका पान करते हैं।

चपचार कूट

- चपचार कूट मिज़ोरम में फरवरी-मार्च में मनाया जाने वाला कृषि से संबंधित पर्व है।
- इस समय तक झूम कृषि के लिये खेत साफ कर लिये गए होते हैं, बीजों की बुआई शुरू करने से पहले, खाली समय में यह त्योहार उमंग के साथ मनाया जाता है।
- इस दौरान किये जाने वाले प्रमुख नृत्य हैं– 'चेराव', 'खुल्लम' व 'सरलमकई'।
- चपचार कूट, मिज़ोरम में कृषि के फसल चक्र से जुड़े तीन प्रमुख त्योहारों में से एक है, अन्य हैं– 'मिम कूट' और 'पावल कूट'।

पचूल

- यह फूलों का त्योहार है। इसे ओडिशा, बिहार तथा पश्चिम बंगाल के संथाल लोग मनाते हैं।

//

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/festival-of-india